1. बरसते बादल

कवि - सुमित्रानंदन पंत

उन्मुखीकरण प्रश्नोत्तर ।

1. मीठे गीत कौन गाती है ?

उ. मीठे गीत कोयल गाती है ।

2. प्यासी धरती पानी किससे माँगती है ?

उ. प्यासी धरती मेघों से (बादलों) से पानी माँगती है ।

३. बादल प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं । कैसे ?

उ. बादलों से वर्षा होती हैं । वर्षा के जल से प्रकृति के पेड़ - पौधे हरे - भरे रहते हैं। धरती पर जीवन दिखाई देता है । इस प्रकार बादल प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं ।

कवि परिचय ।

सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के बेज़ोड कवि माने जाते हैं। उनका जन्म सन् 1900 में में हुआ । वीणा, पल्लव, गुंजन, युगांत, चिदम्बरा आदि प्रमुख रचनाएँ हैं। आपको साहित्य अकादमी, सोवियत रुस और ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। सन् 1977 में आपका निधन हुआ । कविता का उद्देश्य । प्राकृतिक सौन्दर्य बोध कराना, प्रकृति संरक्षण की प्रेरणा इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

पर्यायवाची शब्द ।

1.	तरु	-	पेड़,	वृक्ष,	पादप,	वट	
2.	मेघ	-	बादल,	घन,	जलद		
3.	उर	-	हृदय,	अंतःकरण,	दिल,	मन	
4.	तम	-	अंधकार,	तमस,	अंधेरा		
5.	गगन	-	आकाश,	नभ,	आसमान		
6.	धरती	-	भू,	भूमि,	धरा,	क्षिति,	पृथ्वी, वसुधा
7.	वारि	-	वर्षा,	बरसात,	पावस,	बारिश	

शब्दार्थ ।

. दादुर - मेंढ़क

2. झिल्ली - झींगुर

. सोनबालक - जलपक्षी

आर्द - भीगा हुआ ।

. क्रंदन - रोना

. धारा - प्रवाह निरन्तर बहना

. तृण - तिनका

. रजकण - मिट्टी, धूल

10. इन्द्रधनुष - इन्द्रचाप

. मन भावन - मन को लुभाने वाला ।

. झरना - गिरना / प्रपात

. घुमड़कर - घिर कर (घेर कर)

. मोर - मयूर

. पुलकावलि - प्रेम, हर्षजन्य रोमांच, हर्ष विह्वल

8. चातक - एक पक्षी जो स्वाति नक्षत्र के जल को छोड़कर अन्य कोई जल ग्रहण नहीं करता ।

प्रश्नोत्तर ।

1. मेघ, बिजली और बूँदों का वर्णन यहाँ कैसे किया गया है ?

उ. मेघ, घिर कर, घुमड़कर गर्जन करते हैं । बादलों के हृदय के बीच से बिजली चमकती है और वर्षा की बूँदें धरती एवं जन मानस के हृदय को भिगो देती है ।

2. प्रकृति की कौन - सी चीजें मन को छू लेती है ?

उ. वर्षा की झरती बूँदों के रिमझिम स्वर मन को छू लेते हैं, रोम - रोम सिहर उठता है, वर्षा की धाराएँ धरती के कण - कण को पुलकित कर देती है ।

3. तृण - तृण की प्रसन्नता का क्या भाव है ?

उ. वर्षा की बूँदों से धरती का कण - कण भीग जाता है । तृण, लता पेड़ - पौधे वर्षा के जल से नया जीवन पाकर प्रसन्न हो उठते हैं । वर्षा ऋतु में जल की बूंदें धरती पर गिरती है तो हर प्राणी, (मानव, पशु - पक्षी) सभी में प्रसन्नता का संचार होता है ।

(अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया)

प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. **धरती की शोभा का प्रमुख कार्य वर्षा है । इस पर अपने विचार बताइए ।**

उ. वर्षा ऋतु सबकी प्रिय ऋतु है । वर्षा के समय प्रकृति की सुन्दरता देखने लायक होती है । धरती का कण - कण वर्षा की बूँदों से भीगा होता है । चारों तरफ हरियाली होती है । पेड़ - पौधे, पशु - पक्षी, मनुष्य सभी का रोम - रोम खुशी से झूम उठता है ।प्रकृति में नया जीवन, उत्साह, खुशी दिखाई देती है ।

2. **घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।**

उ. वर्षा काल में आकाश में काले - काले घने बादल छा जाते हैं । घमड़ - घुमड़ कर गर्जन करते हुए बरसते बादल प्रकृति के कण - कण को पुलकित करते हैं । नए जीवन का संचार होता है । घने बादल वर्षा कर प्रकृति को हरा - भरा करते हैं । नया जीवन देते हैं ।

आ) उचित क्रम में लिखिए ।

उ.1. झम - झम - झम - झम मेघ बरसते हैं सावन के ।

2 घुमड़ - घुमड़ गिर मेघ गगन में भरते गर्जन ।

3 धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर ।

इ) नीचे दिए गए भाव की पंक्तियाँ लिखिए ।

1. बादलों के घोर अंधकार के बीच बिजली चमक रही है और मन दिन में ही सपने देखने लगा ।

उ. चम चम बिजलो चमक रहीं रे उर में घन के,

थम थम दिन के तम में सपने जगते मन के ।

2. मिट्टी के कण - कण से कोमल अंकूर फूट रहे हैं ।

उ. रज के कण - कण से तृण - तृण को पुलकावलि थर ।

3. कवि चाहता है कि जीवन में सावन बार - बार आयें और सब मिलकर झूलों में झूलें ।

उ. इन्द्रधनुष के झूलें में झूलें मिल सब जन,

फिर - फिर आये जीवन में सावन मन भावन ।

ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

अभिव्यक्ति सृजनात्मक ।

अ)1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन - चार पंक्तियों में लिखिए ।

वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है । कैसे ?

उ. वर्षा (जल) प्रकृति का जीवन है । वर्षा के जल से धरती पर पेड़ - पौधे, प्राणी जीवित रहते हैं । जल के बिना धरती पर जीवन नहीं होगा । वर्षा के कारण धरती

हरी - भरी, फल - फूलों से भरपूर रहती हैं। हर प्राणी को भोजन मिलता है। नदी, तालाब, जल से भर जाते हैं। इस प्रकार वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है।

2. वर्षा ऋतु पर प्राकृतिक सौन्दर्य पर अपने विचार लिखिए।

उ. वर्षा ऋतु में प्रकृति हरी - भरी होती है। पेड़ - पौधे, फल - फूलों से लदे रहते हैं। आकाश में गरजते बादल एवं वर्षा की बूँदें धरती के प्राणी में नई आशा और खुशी का संचार करती है।

3. 'बरसते बादल' कविता में प्रकृति का सुन्दर चित्रण है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उ. 'बरसते बादल' कविता के कवि सुमित्रानंदन पंत जी हैं। आप प्रकृति के बेज़ोड कवि माने जाते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने वर्षा ऋतु की प्राकृतिक सुन्दरता का मनोहर वर्णन किया है। वर्षा ऋतु सबकी प्रिय ऋतु है। पेड़ - पौधे, पशु - पक्षी, मनुष्य और यहाँ तक की धरती भी खुशी से झूम उठती है। वर्षा ऋतु में आकाश में घुमड़-घुमड़ कर गरजते एवं बरसते बादल अंधकार के बीच आशा का प्रकाश उत्पन्न

का कण - कण वर्षा के जल से भीग जाता है। वर्षा की फुहार में प्रकृति एवं प्राणी का रोम - रोम सिहर उठता है। वर्षा ऋतु में पुलकित मन इन्द्र धनुषी रंग से प्रेरित होकर गीत गाते है कि जीवन में बार - बार सावन का मन भावन महीना आए ।

प्रकृति सौन्दर्य पर एक छोटी - सी कविता लिखिए ।

परियोजना

ई) फिर - फिर आए जीवन में सावन मन भावन ऐसा क्यों कहा गया होगा ? स्पष्ट कीजिए ।

उ.वर्षा ऋतु के चौमासो में सावन का महीना प्रमुख होता है । इस महीने में वर्षा की निरन्तर फुहारे, बौछारे झरती रहती है । वर्षा की बूँदे, गरजते घुमड़ते बादल, बादल के बीच चमकती बिजली धरती के कण - कण में नया जीवन भर देते हैं । धरती के प्राणी - प्राणी में प्रसन्नता की, आशा के भाव जागृत होते हैं । इसलिए कवि कहते हैं कि जीवन में बार - बार सावन मनभावन का आगमन हो जिससे प्रकृति, प्राणी में नई आशा का संचार हो ।

भाषा की बात ।

आ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए ।

पर्याय शब्द लिखिए वाक्य प्रयोग कीजिए ।

क) अ. तरु - पेड़, वृक्ष, विटप, पादप

वा. तरु - हवा में झूमती तरु की डालियाँ नृत्य करती - सी दिखाइ देती हैं ।

गगन - आकाश, नभ, व्योम, अंतरिक्ष

वा. गगन - चन्द्रमा की किरणों से चमक रहा था ।

इ) घन - बादल, मेघ, जलद

वा.	वर्षा ऋतु में गगन में घन घुमड़ - घुमड़ कर गर्जन कर रहे थे ।

तत्सम रुप लिखिए ।

ख)1. सावन - श्रावण	2. सपना - स्वप्न	3. सूरज - सूर्य

ग) तद्भव रुप लिखिए ।

1. गण - गन - जन	2. वारि - बारिश	3. चन्द्र - चाँद

घ) पुनरुक्ति शब्द समझिए ।

1. चम - चम, तृण - तृण, फिर- फिर

आ) इन्हें समझिए और सूचना के अनुसार कीजिए ।

1. धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर (अन्तर स्पष्ट कीजिए ।)

उ.	निरन्तर वर्षा का गिरना एवं वर्षा का जल धरती पर बहना ।

2. इन्द्र धनुष के झूले में झूले मिल सब जन । (अन्तर स्पष्ट कीजिए ।)

उ.	झूले - पालना और झूले - क्रिया रुप, ऊँचाई की ओर बढ़े ।

बरसते हैं । (रेखांकित शब्द का पद परिचय दीजिए ।)

उ.	बादल - संज्ञा (जातिवाचक / द्रव्यवाचक), बहुवचन, वर्तमान काल, पुल्लिंग

4. मन को भाने वाला । (एक शब्द में लिखिए ।)

उ. मन भावन

5. पेड़ - पौधे, पशु - पक्षी (समास पहचानो ।)

उ.1. पेड़ और पौधे 2. पशु और पक्षी (द्वंद्व समास)

*****

व्याकरण

अलंकार

परिभाषा : अलंकार शब्द का अर्थ है गहना, आभूषण । मानव जैसे सजते संवरने के लिए गहने, आभूषणों का प्रयोग करता है उसी प्रकार कवि गण भी कविता को सजाने संवारने के लिए अलंकारों का प्रयोग करते हैं ।

अलंकार के दो भेद किए जा सकते हैं ।

1. शब्दालंकार - अर्थात शब्दों में चमत्कार या सौन्दर्य लाकर ।

(शब्दों के प्रयोग के कारण चमत्कार)

2. अर्थालंकार - अर्थात शब्दों के अर्थ में चमत्कार या सौन्दर्य लाकर ।

(कथन विशेष में सौन्दर्य, अर्थ की विशिष्टता के कारण ।)

उदा:

शब्दालंकार - शब्दों का चमत्कार पूर्ण प्रयोग करके अभिव्यक्ति को शब्द के स्तर पर सुन्दर बनाया जाता है । उदा: ''प्रतिभट कटक कटीले केते काटि - काटि

कालिका - सी किलकि कलेऊ देती काल को ।''

इस पंक्ति में 'क' वर्ण के शब्दों का बार - बार प्रयोग से शब्द के सौन्दर्य में चमत्कार उत्पन्न हुआ है ।

अर्थालंकार - जब काव्य पंक्ति में शब्दों का इस प्रकार प्रयोग किया गया हो जिससे अर्थ के स्तर पर सौन्दर्य एवं चमत्कार उत्पन्न करके अभिव्यक्ति को प्रभाव

शाली बनाया गया है ।

जैसे : - काली घटा का घमंड घटा वाक्य में शब्द दो बार घटा शब्द प्रयुक्त हुआ है ।

पर दोनों के अर्थ में भिन्नता है । काली घटा का अर्थ है काली बदली । दूसरी बार

घमंड घटा में घटा का अर्थ है घटना या कम होना । इस प्रकार एक शब्द का दो

भिन्नअर्थों में प्रयोग से उक्ति में सौन्दर्य आ गया है ।

शब्दालंकार के भेद : -

1. अनुप्रास अलंकार - जहाँ एक ही वर्ण की बार - बार आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास

अलंकार होता है ।

जैस : - 1. कोमल कलाप कोकिल कमनीय कूकती थी । (क वर्ण की आवृत्ति)

2. तरनि तनुजा तट तरुवर बहु छाए । (त वर्ण की आवृत्ति हुई है ।)

2. यमक अलंकार जब एक ही शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो तथा समान

शब्दों के अर्थ भिन्न हों तो वहाँ यमक अलंकार होता है ।

जैसे : - कर का मनका डारि दे मन का मन का मन फेर

एक मनका का अर्थ - माला की दाना (मोती)

दूसरा अर्थ - मन का / हृदय का

2. तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती थी ।

एक का अर्थ तीन बार है । (दूसरे तीन बेर का अर्थ है तीन बेर (फल)

कनक - कनक तै सोगुनी - कनक का अर्थ सोना और धतुरा है ।

3. श्लेष अलंकार - इस का शाब्दिक अर्थ है । चिपका हुआ अर्थात जहाँ एक बार

प्रयोग होने पर भी किसी शब्द से दो यो दो से अधिक अर्थ निकलें । उसे श्लेष

अलंकार कहते हैं ।

उदाः ''नव जीवन दो घन श्याम हमें ''

यहाँ जीवन तथा घन श्याम शब्द है ।

जीवन का अर्थ - पानी और जीवन के लिए आया है । घनश्याम का अर्थ बादल,

श्रीकृष्ण के लिए आया है ।

अर्थालंकार के भेद :

1. उपमा अलंकार - उपमा का अर्थ है दो वस्तुओं या व्यक्तियों की समानता

दिखाना । किसी वस्तु की तुलना किसी प्रसिध्द व्यक्ति या वस्तु से की जाती है

उसे उपमालंकार कहते हैं ।

मखमल से झूल पड़े, हाथी सा टीला ।

1. हाथी सा टीला (टीले को हाथी के समान बताया गया है ।)

2, फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की ढ़ेरी ।

बच्ची को फूल के समान (नाजूक) कोमल बताया गया है ।

2. **रुपक अलंकार** - किन्ही दो वस्तुओं या व्यक्तियों की किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति से तुलना की जाती है परन्तु दोनों एकाकार हो जाती है अर्थात एक वस्तु याव्यक्ति को दूसरी वस्तु या व्यक्ति बना दिया जाता है ।

चरण कमल - अर्थात चरण ही कमल हैं ।

मुख चन्द्र मुख ही चन्द्र है .

3. **अतिश्योक्ति अलंकार** - अतिश्योक्ति / अतिशय उक्ति अर्थात विषय का बहुत बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किया जाता है ।

उदा:देख लो साकेत नगरी यही, स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही । यहाँ साकेत नगरी का अत्यन्त बढ़ा - चढ़ा कर वर्णन किया गया है । साकेत नगरी की ऊँचाई के लिए स्वग से मिलने जा रही है । यह बढ़ा - चढ़ा कर कही गई ।

गढ़ महोबे में हैं एक चमचा,

जिसमें नौ मन दाल समाय ।

यहाँ चमचे का अत्यन्त बढ़ा - चढ़ा कर वर्णन किया गया ।